International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN Number: 2394-7519
IJSR 2014; 1(1): 05-07
© 2014 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 18-09-2014
Accepted: 07-10-2014

Dr. Devesh Kumar mishra
Assistant professor, Dept. of Sanskrit Uttarakhand Open University Teen pani bypass road, Haldwani, Nainital.

कालिदास कृत मेघदूतम् में मेघ–यात्रा ?
(Kalidas Krit Meghdutam Mein Megh Yatra)

Devesh Kumar mishra

सारांशिका
जीवन दर्शन, जीवन बोध, अन्तर्निहित ज्ञान तथा विज्ञान शब्द के शाब्द बोध से परिचित कवि कालिदास ने परवर्ती साहित्य को न केवल गाम्भीर्य प्रदान किया, अपितु वर्णन कौशल की ऐसी पराकाष्ठा का पाठ भी पढ़ाया जिसमें काव्य साहित्य की अन्यान्य विधाओं का समावेश भी हो । ''**कीर्तिर्यस्य स जीवति**'' का सिद्धान्त ही कालिदास के विषय में अमरत्व का एकमात्र प्रमाण है । मेघदूत के दो भाग है – पूर्वमेघ और उत्तरमेघ । पूर्वमेघ में प्रारम्भिक विषय वस्तु के माध्यम से कवि ने यक्ष परिचय और मंगलाचरण का भी निर्वाह किया है । मेघोदूतो यस्मिन काव्ये तत् मेघदूतम् । अथवा मेघ एव दूतो मेघदूतः, मेघश्चासौ दूतः मेघदूतः । तमधिकृत्य कृतं काव्यं मेघदूतम् । अर्थात् जिस काव्य में मेघ को दूत बनाया गया है वह काव्य मेघदूत है अथवा मेघ ही दूत हो जिसमें वह मेघदूत है या यह मेघ दूत है जिसे अधिकृत करके लिखा गया काव्य मेघदूत है।

कूटशब्द: अन्तर्निहित, अक्षुण, सैद्धान्तिक, परवर्ती, मर्मस्पर्शी, रसाभास, दशार्णेश, प्रभातकालीन ।

प्रस्तावना
वस्तुतः कालिदास प्राकृतिक, सामाजिक, नैतिक, या व्यावहारिक पक्षों के वर्णन में अभावग्रस्त कवि नहीं हैं बल्कि उनकी कविताचातुरी और नैपुण्य नें अन्यों को भी समृद्ध बनाया है । सैद्धान्तिक पक्ष भी अक्षुण्ण जैसा प्रतीत होता है । जीवन दर्शन, जीवन बोध, अन्तर्निहित ज्ञान तथा विज्ञान शब्द के शाब्द बोध से परिचित कवि कालिदास ने परवर्ती साहित्य को न केवल गाम्भीर्य प्रदान किया, अपितु वर्णन कौशल की ऐसी पराकाष्ठा का पाठ भी पढ़ाया जिसमें काव्य साहित्य की अन्यान्य विधाओं का समावेश भी हो । ''**कीर्तिर्यस्य स जीवति**'' का सिद्धान्त ही कालिदास के विषय में अमरत्व का एकमात्र प्रमाण है।

ऐतिहासिक प्रमाणों में कालिदास के जीवन सम्बन्धी मतैक्यता का सर्वथा अभाव है । कालिदास कौन थे ? कहाँ के थे ? कहाँ कहाँ गये थे ? ऐसा निश्चय करना कठिन और दुष्कर है । किन्तु कालिदास रचित दूत काव्य मेघदूत का अवलोकन यह प्रमाणित करता है कि उन्हें भौगोलिक परिवेश का नितान्त प्रामाणिक और जीवन्त बोध था ऐसा कहनें का तात्पर्य यह है कि जिन महत्वपूर्ण स्थलों, जिन प्राकृतिक परिवेशों के मर्मस्पर्शी और स्पष्ट वर्णन मेघदूत के पूर्वमेघ में किये गये हैं वे या तो उन सभी स्थलों की यात्रा – प्रत्यक्ष से सम्भव हैं अथवा किसी एक स्थान पर रहकर उन विभिन्न स्थानों का वैशिष्ट्य वर्णन कालिदास की केवल कल्पना भूमि से सम्भव हुए हों । यात्रा साहित्य यद्यपि हिन्दी जगत का एक समृद्ध साहित्य है तथापि संस्कृत जगत भी इससे अछूता नहीं हैं । यात्रा पठन से जो भौगोलिकता घर बैठे जीवन्त होती है वह प्रत्यक्ष रूप में अनेक उपलब्धियों के साथ प्रामाणिक होती है । एक ओर यात्रा वर्णन कवि के भौगोलिक ज्ञान को दर्शाता है तो दूसरी ओर पाठक को सहज अनुभूति के माध्यम से कला – कौशल और संस्कृति का विस्तार परिचय भी कराता है । राहुल सांकृत्यायन आदि द्वारा वर्णित यात्रा तथ्य इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं । यात्रा तो कालिदास के मेघदूत में मेघ ;बादलद्ध ने भी की है जो विरह दग्ध होकर बादल को सन्देशवाहक बनाकर रामगिरि पर्वत से अलकापुरी तक भेजता है । मेघ के इस यात्रा पथ में पर्वतों, प्राकृतिक छटाओं, नगरो, और उज्जयिनी की स्त्रियों आदि के जो स्वाभाविक चित्रण उपस्थित है उनसे महाकवि कालिदास की रचना – धर्मिता में एक अप्रतिम भौगोलिक वातावरण का निदर्शन और प्राकृतिक वैशिष्ट्य की उपलब्धि होती है जो एक अखण्ड रसाभास है । मेघ के यात्रा पथ में पर्वत, सागर, नदी, झरनें, सरोवर, वनकानन, सूर्य, चन्द्रमा, रात्रि, दिवस, लतायें, वनस्पतियॉ, तथा पशु पक्षियों के प्राकृतिक विषयों का हृदयहारी चित्रण है । विरही यक्ष शापित है, प्रिया वियोगी है, काम सन्तप्त भी है, उसकी काम सन्तप्तता ने उसे मतिहीन

Correspondence
Devesh Kumar mishra
Assistant professor, Dept. of Sanskrit Uttarakhand Open University Teen pani bypass road, Haldwani, Nainital.

बनाया है जिससे वह चेतन और अचेतन का विवेक किये बिना ही बादल को अपनी प्रिया के पास सन्देश भेजनें के लिये दूत बनाता है, माध्यम बनाता है ।सर्वथा विचारणीय है कि अपार जल – राशि धारण करने वाला कोई मेघखण्ड किसी की मनोदशा का सन्देश लेकर किसी अन्य के पास कैसें पहुँचा सकता है ? किन्तु कालिदास के मेघ ने तो ऐसा किया है । विरही यक्ष पात्र हो सकता है प्रौढ़ नहीं । जबकि कालिदास सुपात्र भी है प्रौढ़ भी । यक्ष को चेत और अचेत का विवेक नहीं हो सकता है क्योंकि वह वर्ण्य विषय में स्वामी द्वारा दिए गए कार्यों के सम्पादन में असफल होकर शापित हो चुका है । संस्कृत साहित्य में बिम्बित यक्ष जाति सुकुमार जाति है उसके लिये प्रिया से एक वर्ष का वियोग अत्यन्त दारूण है । ऐसा होने से उसका देवत्व नष्ट है । पुनश्च काव्य प्रतिभा नें कॉच मणि और कांचन को एक सूत्र में पिरोकर चेतन और अचेतन के बीच में सजीवता स्थापित कर संवादपूर्ण बनाते हुए प्रिया – प्रियतम संयोग कराकर सहृदय पाठक के लिए मेघयात्रा से अनुस्यूत प्राकृतिक, हृदयावर्जक और चिरस्थायी आनन्द प्रदान किया है । निश्चित स्थान पर रहकर विभिन्न प्रान्तों दूरस्थ वन प्रदेशों तथा देश विशेष की महिला संस्कृति का वर्णन इतना जीवन्त और यथार्थ होगा .... ऐसा कल्पनातीत है ।

मेघदूत के दो भाग है – पूर्वमेघ और उत्तरमेघ । पूर्वमेघ में प्रारम्भिक विषय वस्तु के माध्यम से कवि ने यक्ष परिचय और मंगलाचरण का भी निर्वाह किया है । जहॉ पर यह बताया गया है कि यक्षों के अधिपति कुबेर ने किसी यक्ष को जो उत्तरदायित्व सौंपा था उसका प्रमादवश सम्पादन न करने से कुबेर ने अपराधमानकर उसे यह शाप दे दिया । इसके पश्चात् वह महत्वहीन होकर एक वर्ष तक अपनी प्रिया से वियुक्त होते हुए जनकतनया सीता के स्नान किये हुये पवित्र जल वाले घनी छाया के वृक्षों से युक्त रामगिरि नामक पर्वत के आश्रमों में निवास करने लगा।[1] शापित होने के कारण यक्ष की सम्पूर्ण महिमा समाप्त हो चुकी है वह अपनी नगरी अलका से आकर रामगिरि पर्वत के आश्रमों में निवास कर रहा है । इस क्रम में आठ महीनें बीत गये, यक्ष ने उसी रामगिरि पर्वत की चोटी पर चिपके हुये मेघ को देखा, उस मेघ दर्शन ने ही इस क्रम में आठ महीनें बीत गये, यक्ष ने उसी रामगिरि पर्वत की चोटी पर चिपके हुये मेघ को देखा, उस मेघ दर्शन ने ही यक्ष के प्रिया विरह को दुःसह बनाया।2 रामगिरि पर्वत भौगोलिक दृष्टि से हिमालय से समीपवर्ती किसी पर्वत का नाम है। यह तो कालिदास के वर्णन का एक बहाना मात्र है कि वे उदात्त प्रकृति और भौगोलिकता को रचना में उत्कृष्टता प्रदान करना चाहते है । किन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि उनके इस रचना विधान से विश्व वाङ्मय में दूत काव्य परम्परा का सूत्रपात आरम्भ हुआ । जड़ को किसी चेतन ने विरहावस्था की सम्प्रेषणीयता हेतु प्रथम बार कालिदास के मेघदूतम् में ही दूत बनाया है । यहॉ बिम्ब – प्रतिबिम्ब भाव की उपपत्ति का यह एक मौलिक और चिरनवीन साहित्यिक निदर्शन है जो अल्पबुद्धि को भी सहज ही कल्पनाशीलता और उस कल्पना में यथार्थता का बोध कराने लगता है ।

सबसे पहले मेघदूत शब्द का अर्थ समझा जाये तो यह प्राकट्य होता है कि –

मेघोदूतो यस्मिन काव्ये तत् मेघदूतम् । अथवा मेघ एव दूतो मेघदूतः, मेघश्चासौ दूतः मेघदूतः । तमधिकृत्य कृतं काव्यं मेघदूतम् । अर्थात् जिस काव्य में मेघ को दूत बनाया गया है वह काव्य मेघदूत है अथवा मेघ ही दूत हो जिसमें वह मेघदूत है या यह मेघ दूत है जिसे अधिकृत करके लिखा गया काव्य मेघदूत है । आचार्य मल्लिनाथ ने कालिदास के इस प्रणयन को मेघदूत की एक टीका ''**संजीवनी**'' में यह कहा है कि राम का सीता के प्रति हनुमान द्वारा प्रेषित सन्देश ही मेघदूतम् की रचना में प्रेरणास्रोत बना –

''**सीतां प्रति रामस्य हनुमत् सन्देशं मनसि निधाय मेघसन्देशं कविः कृतवान्** ।''[3] अधिकार शब्द का अर्थ कर्त्तव्य भी होता है जिससे प्रमत्त अर्थात् असावधान या अनवधान व्यक्ति महत्वहीन या महिमाहीन हो ही जाता है । जिस तरह स्वामी द्वारा दिये गये कार्य के प्रति प्रमत्त यक्ष की दशा हुई है । अतएव भारतीय मनीषा की जो दार्शनिकता कर्त्तव्यपालन में निहित है वह भी प्रकारान्तर से कालिदास द्वारा पूर्वमेघ के प्रथम श्लोक में ही निर्दिष्ट है । यक्ष का अभीष्ट केवल विरहावस्था का सम्प्रेषण नहीं बल्कि अपने सकुशल जीवित रहने का समाचार भेजना है । मेघयात्रा शुभ होगी इसके लिये शकुन भी परिलक्षित है । रास्तें में राजहंस मेघ का साथ देंगे जिससे वह अपना मार्ग पूरा करेगा । सर्वप्रथम वह यक्ष मेघ को अलकापुरी का मार्ग बतलाते हुये कहता है कि जाते समय गॉव की सुन्दरियॉ और सिद्धांगनायें लोभ मुद्रा से मेघ को देखेंगी ।4 यहॉ विशेष ध्यातव्य है कि मेघ को यक्ष ने उस पर्वत की चोटी पर वप्रक्रीडा ;उत्खातकेलिद्ध पर दन्तप्रहार करते हुये हाथी की तरह देखा जिसे हलायुध कोश में इस प्रकार कहा गया है – तिर्यक् दन्त प्रहारस्तु गजः परिणतो मतः5 अर्थात् यक्ष तो विरहावस्था में है फिर भी मेघ को देखकर उसकी कल्पना क्रीड़ा जैसे कोमल विषय का अतिक्रमण नहीं कर पा रही है । इसीलिये वह एक गज की क्रीड़ा का जो विशाल शरीर वाला है और बलसम्पन्न होते हुये भी कान्तानुरागी होकर बद्ध हो जाता है । यही संयोग जड़मेघ को सन्देश वाहकता में दूत की यथार्थता का आरोप सार्थक करता है । यही समर्थन भारतीय मनीषा का प्रस्तुत श्लोक भी करता है –

कुरंगमातंगपतंगभृंगमीना हताः पंचभिरेव पंच ।
यस्तु प्रमादी न स हन्नयते कथं यः सेवते पंचभिरेव पंच । ।

इसके पश्चात् मेघ उत्तर की ओर जायेगा और निरन्तर उत्तराभिमुख ही होता रहेगा। नर्मदा नदी के जल का पान करेगा । इस बीच जिन प्राकृतिक शोभाओं को यक्ष ने मेघ के समक्ष प्रकट किया है वह उसे यात्रा हेतु प्रोत्साहित करते है । जैसे – श्लोक संख्या 15 से लेकर 18 तक में वर्णित विभिन्न प्राकृतिक छटायें ।

इसी क्रम में यक्ष मेघ से कहता है कि तुम विदिशा नाम की नगरी जाकर अपनी विलासिता का सम्पूर्ण फल भी प्राप्त कर लोगे । क्योंकि वहॉ पर वेत्रवती नाम की नदी के मधुर जल को चंचल लहरों रूपी नायिका कटाक्ष की भॉति अपनी गर्जना से तटप्रान्त के जल को पीयोगे । अन्यथा वेत्रवती का आधुनिक नाम बेतवा है । दशार्णेश की राजधानी का नाम विदिशा है । विदिशा के समीप विश्राम करने के लिये मेघ नीच्चैः नामक पर्वत पर रूकेगा । जहॉ विदिशा वासियों के उत्कट यौवन से भी परिचित होगा । पुनः जंगली नदियों के मार्ग से होता हुआ जूही की कलियों को नवीन जल से सींचता हुआ फूल चुनने वाली स्त्रियों से परिचय करते हुये आगे बढ़ेगा । यक्ष बताता है कि ऐसा करते रहो तुम आगे बढ़ते रहना और उज्जयिनी पहुॅच जाना पूर्वमेघ के 28 वें श्लोक में पुनः मेघ का उत्तर दक्षिण और दक्षिण उत्तर का घुमाउ मार्ग उज्जयिनी जाने के लिये उत्तराभिमुख हो जायेगा । जिस हेतु उज्जयिनी जाने में उसका मार्ग यद्यपि टेढ़ा भी हो रहा है । महाकवि की अपूर्व भौगोलिक दृष्टि ने यक्ष से कहलाया है कि –

वक्रः पन्था यद्यपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भुरूज्यायिन्याः ।
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां
लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वंचिंतोऽसि ।।

इसी श्लोक में कवि ने अपने नैपुण्य से निर्विन्ध्या नदी का पूर्वाभास भी करा दिया। उस नदी में शिलाखण्ड है जिससे उसके वेग लड़खड़ाते हुये है । इसके पश्चात् वह सिन्धु नामक नदी से मिलन करेगा । जो मेघ मिलन की प्रतिक्षा में है। श्लोक संख्या 30 इसका पूर्ण कथन करता है । सिन्धु नदी का वर्णन होना भी कालिदास के भौगोलिक परिवेशीय ज्ञान को नितान्त पुष्ट करता है । उज्जयिनी वर्तमान उज्जैन है सिन्धु नदी के मिलन के पश्चात् यक्ष ने मेघ को अवन्ति नामक जनपद में जाने को कहा है । उज्जयिनी में क्षिप्रा है जहॉ की प्रभातकालीन वायु के गुणों में सारसों के मद का तीव्र होना चित्रित किया गया है । अतः यात्रा लाभ में कालिदास की दृष्टि पारखी है । साथ ही यहॉ पर उज्जैयिनी के बाजारों में बिकने

वाली विभिन्न वस्तुओं और आभुषणों के वर्णन भी है । जिनसे यही प्रतीत होता है कि मेघ के स्थान पर कालिदास ने ही यात्रा की हो ।

इसी कम में महाकाल इत्यादि के दर्शन कराते हुये कवि ने यक्ष द्वारा मेघ को गम्भीरा नदी के भी दर्शन कराये है । पश्चात् मेघ बरसेगा और पृथ्वी फल – फूलों वाली होगी । उसी समय वह देवगिरि नामक स्थान आधुनिक ;देवगढ़द्ध को जाने की इच्छा करेगा । देवगिरि में कार्तिकेय के निवास स्थान होने का पूर्वाभास यक्ष ने मेघ को कराया है –

तत्रस्कन्दं नियतवसति पुष्पमेघी कृतात्मा

पूर्वमेघ 47

यहॉ से मेघ पर्वत पर चढ़ेगा और अपनी गर्जनों से कार्तिकेय के मोर को नचायेगा। इस कम में यक्ष कहता है कि ऐसा करते हुये तुम देखोगे कि सिद्ध नामक देवताओं के जोड़े तुम्हारा मार्ग प्रशस्त करेंगे । क्योंकि वर्षा के कारण उनकी वीणा भींग जाने का भय है जिससे वह कार्तिकेय की आराधना में वीणा वादन नहीं कर सकेंगे । कितना सजीव चित्रण है कि आज भी जल वृष्टि वाले मेघ खण्ड को देखकर गृहस्थ अपनी वस्तुओं की रक्षा में तत्पर हो जाते है । यहीं से थोड़ा और चलकर मेघ राजा रन्तिदेव के गवालम्भ यज्ञ से उत्पन्न कीर्ति रूपी चर्मण्वती नदी का भी झुककर सम्मान करेगा । अर्थात् यहॉ पर मेघ अपनी यात्रा में पर्वत से नीचे उतरेगा । चर्मण्वती पार करने के पश्चात् मेघ दशपुर नामक नगर से होकर जायेगा । वहॉ की स्त्रियों की कान्ति का प्रत्यक्ष अनुभव कालिदास को है तभी तो कह रहे है कि दशपुर की स्त्रियॉ तुम्हें उत्सुकता पूर्वक देखेंगी जिनके नेत्रों में लता के समान भौंहों का विलास है पलके उपर उठ जाने के कारण नेत्रों की शोभा कुन्दपुष्प के साथ हिलते हुये भौरों की तरह है । दशपुर के बाद मेघ ब्रह्मावर्त नामक जनपद में अपनी छाया बिखेरते हुये उस स्थान पर जायेगा जहॉ अर्जून ने सैकड़ो बाण क्षत्रियों के मुख पर बरसाये थें।

निष्कर्ष –

कालिदास रचित दूत काव्य मेघदूत का अवलोकन यह प्रमाणित करता है कि उन्हें भौगोलिक परिवेश का नितान्त प्रामाणिक और जीवन्त बोध था ऐसा कहनें का तात्पर्य यह है कि जिन महत्वपूर्ण स्थलों, जिन प्राकृतिक परिवेशों के मर्मस्पर्शी और स्पष्ट वर्णन मेघदूत के पूर्वमेघ में किये गये हैं वे या तो उन सभी स्थलों की यात्रा – प्रत्यक्ष से सम्भव हैं अथवा किसी एक स्थान पर रहकर उन विभिन्न स्थानों का वैशिष्ट्य वर्णन कालिदास की केवल कल्पना भूमि से सम्भव हुए हों ।